# MP Board Class 8th General English Notes Chapter 14 Azad: The Martyr

**Azad: The Martyr Summary**

1. Chandra Shekhar, son of Pandit Sita Ram Tiwari and Jagrani Devi, was born in village Bhabra in Jhabua district (Present Madhya Pradesh) on 23rd July 1906.

अनुवाद:
पंडित सीताराम तिवारी और जगरानी देवी के पुत्र चन्द्रशेखर का जन्म झाबुआ जिला (वर्तमान में मध्य प्रदेश)। के भाबरा गाँव में 23 जुलाई, 1906 को हुआ था।

2. He received his early education in Bhabra. For higher education he went to Sanskrit Pathshala at Varanasi. He was an ardent follower of Hanuman and once disguised himself as a priest in a Hanuman temple to escape the clutches of the British police. Young Chandra Shekhar was attracted by the great national upsurge of the non-violent non-cooperation movement of 1920 – 21 under the leadership of Mahatma Gandhi. He joined it and was arrested and produced before the magistrate. He gave his name as Azad', his father's name as 'Swatantra', and his residence as 'Prison. This provoked the magistrate, who sentenced him for fifteen lashes of a flog.

अनुवाद:
उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भाबरा में हुई। उच्च शिक्षा उन्होंने वाराणसी के संस्कृत पाठशाला में प्राप्त की वह हनुमान के अत्यधिक भक्त थे और एक बार ब्रिटिश पुलिस के चंगुल से बचने के लिए उन्होंने एक हनुमान मन्दिर में पुजारी बनने का स्वांग रचा। युवा चन्द्रशेखर महात्मा गाँधी के नेतृत्व में 1920-21 के अहिंसक असहयोग आन्दोलन की महान राष्ट्रीय लहर से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने इसमें भाग लिया और गिरफ्तार हुए और मजिस्ट्रेट के सामने पेश हुए। उन्होंने अपना नाम 'आजाद',अपने पिता का नाम 'स्वतन्त्र' और अपना निवास-स्थान जेल को बताया। इससे मजिस्ट्रेट भड़क गया और उसने उन्हें 15 कोड़ों की सजा दे दी।

3. As a revolutionary, he adopted the surname 'Azad' which means 'free'. He once claimed that as he was named "Azad' he would never be taken alive by the police. Chandra Shekhar Azad was a great Indian freedom fighter. His fierce patriotism and courage inspired others to enter the freedom struggle. Chandra Shekhar was the mentor of Bhagat Singh, who was also a great freedom fighter. Both Chandra Shekhar and Bhagat Singh actively participated in revolutionary activities. He was deeply troubled by the Jallianwala Bagh massacre in Amritsar in 1919. He was also involved in the Kakori Case.

अनुवाद:
एक क्रान्तिकारी के रूप में उन्होंने अपना उपनाम 'आजाद' रख लिया जिसका अर्थ 'स्वतन्त्र' है। उन्होंने यह दावा किया था कि अपने नाम के अनुरूप वह पुलिस द्वारा कभी जीवित नहीं पकड़े जाएँगे। चन्द्रशेखर आज़ाद महान भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी थे। उनकी प्रचण्ड राष्ट्रभक्ति एवं साहस ने अन्य लोगों को स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़ने को प्रेरित किया। चन्द्रशेखर भगत सिंह के गुरु थे, जो एक महान् स्वतन्त्रता सेनानी थे। चन्द्रशेखर एवं भगत सिंह दोनों ने क्रान्तिकारी गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। वह 1919 में अमृतसर के जलियाँवाला बाग जनसंहार से बहुत अधिक दुःखी (परेशान) हुए। वह काकोरी के काण्ड में भी सम्मिलित थे।

4. After the suspension of the non-cooperation movement he was attracted towards more aggressive revolutionary ideals.Chandra Shekhar was a terror for the British police. He was on their hit list and the British police badly wanted to capture him dead or alive. On February 27, 1931, Chandra Shekhar Azad met two of his comrades at the Azad Park (Alfred Park) in Allahabad. He was betrayed by an informer to the British police. The police surrounded the park and ordered Chandra Shekhar Azad to surrender. Azad fought valiantly and killed three policemen. But finding himself surrounded, he shot himself. Thus he kept his pledge of not being caught alive. He used to recite his favourite Hindustani couplet.

अनुवाद:
असहयोग आन्दोलन के थम जाने के बाद वे और अधिक आक्रामक क्रान्तिकारी आदर्शों की ओर आकर्षित हुए। चन्द्रशेखर ब्रिटिश पुलिस के लिए एक आतंक थे। वह उनके निशाने पर थे और ब्रिटिश पुलिस उन्हें किसी भी तरह जीवित या मृत पकड़ना चाहती थी। 27 फरवरी, 1931 को चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद के आजाद पार्क (अल्फ्रेड पार्क) में अपने दो साथियों से मिलने आये। ब्रिटिश पुलिस के एक मुखबिर द्वारा उनके साथ विश्वासघात किया गया। पुलिस ने पार्क को चारों ओर से घेर लिया और चन्द्रशेखर आजाद से समर्पण करने को कहा। आज़ाद बहादुरी के साथ लड़े और उन्होंने तीन पुलिसकर्मियों को मार दिया। लेकिन स्वयं को चारों ओर से घिरे हुए देखकर उन्होंने स्वयं को गोली मार ली। इस प्रकार उन्होंने स्वयं को जीवित न पकड़े जाने के प्रण को निभाया। वह अपने प्रिय हिन्दुस्तानी दोहे को गाते रहते थे।

5. Dushman ki goliyon ka hum samna karenge
Azad hee rahe hain, Azad hee rahenge. To pay
homage to such a revolutionary hero of Bharat
Mata the State Government has decided to institute 'Shaheed Chandra Shekhar Azad Memorial Award'. The Award will carry an amount of Rs. 1-50 Lakhs and be presented at a special function to be organized at Bhopal on Balidan Diwas of Chandra Shekhar Azad.

अनुवाद:
दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे आज़ाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे। भारत माता के ऐसे क्रान्तिकारी नायक को श्रद्धांजलि देने के लिए राज्य सरकार ने 'शहीद चन्द्रशेखर आजाद स्मृति पुरस्कार' स्थापित करने का निर्णय किया है। पुरस्कार की राशि ₹ 1.50 लाख होगी और यह चन्द्रशेखर आज़ाद के बलिदान दिवस पर आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान किया जाएगा।

https://www.evidyarthi.in/